मासिक समाचार पत्र

परिसर

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,मेरठ

जुलाई–अगस्त 2025 अंक

विश्वविद्यालय में निकली तिरंगा यात्रा के दौरान सेल्फी प्वाइंट पर कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला। (खबर पेज 4 पर)

इंडिया टुडे एमडीआरए बेस्ट यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में विशेष बात यह है कि 'इंफ्रास्ट्रक्चर एंड लिविंग एक्सपीरियंस' तथा 'पर्सनेलिटी एंड लीडरशिप डेवलपमेंट' जैसी श्रेणियों में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय को राज्य विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्थान मिला है।

सीसीएसयू को सरकारी विश्वविद्यालयों में 17वां स्थान

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने एक बार फिर शैक्षणिक गुणवत्ता और प्रशासनिक दक्षता के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इंडिया टुडे एमडीआरए बेस्ट यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में विश्वविद्यालय को देश के शीर्ष सामान्य (सरकारी) विश्वविद्यालयों में 17वां स्थान प्राप्त हुआ है। वहीं, विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के निरंतर प्रयास, नवाचार और टीम भावना का प्रतिफल है।

यह रैंकिंग देशभर के विश्वविद्यालयों के बीच पांच प्रमुख मापदंडों पर आधारित होती है। इनमें प्रतिष्ठा और प्रशासन, शैक्षणिक एवं शोध उत्कृष्टता, भौतिक संसाधन और छात्र अनुभव, व्यक्तित्व और नेतृत्व विकास तथा कैरियर प्रगति और प्लेसमेंट शामिल हैं।

यह उपलब्धि विश्वविद्यालय के निरंतर प्रयास, नवाचार और टीम भावना का प्रतिफल है। यह सम्मान चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। ● *कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला*

सीसीएसयू की रैंकिंग में लगातार सुधार देखने को मिला है। वर्ष 2022 में 24वें स्थान से शुरू हुई यह यात्रा 2023 में 22वें, 2024 में 18वें और अब–2025 में 17वें स्थान तक पहुंची है। यह दर्शाता है कि विश्वविद्यालय ने गुणवत्ता और परिणाम आधारित कार्यशैली को प्राथमिकता दी है।

विशेष बात यह है कि 'इंफ्रास्ट्रक्चर एंड लिविंग एक्सपीरियंस' तथा 'पर्सनेलिटी एंड लीडरशिप डेवलपमेंट' जैसी श्रेणियों में विश्वविद्यालय को राज्य विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है।

यह उपलब्धि विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं उन्हें उत्कृष्ट संसाधनों से युक्त वातावरण उपलब्ध कराने की दिशा में विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने कहा कि यह सम्मान विश्वविद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

विश्वविद्यालय का लक्ष्य

प्रोफेसर बीरपाल सिंह का कहना है कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य अब वैश्विक रैंकिंग में अपनी स्थिति मजबूत करना है। नई शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप कौशल–आधारित शिक्षा, बहुविषयी दृष्टिकोण और डिजिटल नवाचारों को प्राथमिकता दी जा रही है। आने वाले वर्षों में यह संस्थान शिक्षण, शोध और समाज सेवा के क्षेत्र में और ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति बने

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के हिन्दी विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष रहे प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी, हल्द्वानी स्थित उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति बनाए गए हैं। विश्वविद्यालय परिनियमावली–2009 के तहत गठित अन्वेषण समिति द्वारा प्रस्तुत पैनल में से चयन करते हुए कुलाधिपति राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) उत्तराखंड ने प्रोफेसर लोहनी को कुलपति नियुक्त किया है।

प्रोफेसर लोहनी को निहित प्रावधानों के तहत कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि अथवा अग्रेत्तर आदेश तक, जो भी पहले हो, के लिए कुलपति नियुक्त किया गया है। शिक्षा जगत में प्रो. लोहनी को शैक्षिक प्रशासक के रूप में जाना जाता है। उनकी नियुक्ति से विश्वविद्यालय के शैक्षणिक और प्रशासनिक विकास को नई दिशा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

प्रो नवीन चंद्र लोहनी ने देश–विदेश में हिंदी भाषा के उत्थान और प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नई सदी के उपन्यास, पांच लाख का हिंदी मास्टर, खड़ी बोली की साहित्यिक विधाएं और व्यंग संग्रह जैसी उनकी 12 पुस्तकें और 85 शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के गांव पचार के रहने वाले प्रो.लोहनी राज्य के युवाओं को दूरस्थ शिक्षा से जोड़ने के लिए अपने लंबे शिक्षण अनुभव का उपयोग करेंगे।

प्रो. लोहनी साढ़े तीन दशक से अधिक लंबे अनुभव में स्विटजरलैंड के लौजान विश्वविद्यालय में रबींद्रनाथ टैगोर चेयर और चीन के शंघाई अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विवि के आइसीसीआर चेयर में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे। चीन में वह विदेश मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की प्रतिनियुक्ति पर गए थे। 19 फरवरी, 1990 को एनआरईसी कालेज खुर्जा से शिक्षण सेवा शुरू करने वाले प्रो लोहनी 14 मई, 2002 से चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से जुड़े थे।

चौधरी चरण सिंह विवि में कार्यरत रहने के साथ ही प्रो. लोहनी राजकीय महाविद्यालय जेवर के प्रोफेसर इंचार्ज, उत्तराखंड भाषा संस्थान के सदस्य के साथ ही साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के संयोजक भी रहे। उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद आलोचना सम्मान व उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान ने शब्द शिल्पी सम्मान से अलंकृत किया गया है।

हिंदी की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति व शैक्षणिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में प्रवासी साहित्य पाठ्यक्रम के रूप में वर्ष 2009–10 से प्रारंभ किया। स्थानीय भाषा व साहित्य को महत्व देने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से वृहद शोध परियोजनाओं को भी उन्होंने पूरा किया।

सीसीएसयू ने इन्फ्लिबनेट से किया सहयोग समझौता

इन्फ्लिबनेट के साथ एमओयू के दौरान राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के साथ कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

परिसर संवाददाता

मेरठ। राज्यपाल आनंदी बेन पटेल की अध्यक्षता में प्रदेश के 38 राज्य विश्वविद्यालय एवं संस्थानों ने मिलकर एक साथ सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क इन्फ्लिबनेट से एमओयू पर हस्ताक्षर किए। पिछले कुछ समय में इन्फ्लिबनेट ने नई सेवाएं शुरू की हैं। उन सेवाओं को विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध कराने के लिए यह एमओयू हुए हैं। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने भी एमओयू पर हस्ताक्षर किया है।

सीसीएसयू के पुस्तकालयाध्यक्ष प्रोफेसर जेऐ सिद्दीकी के अनुसार इन्फ्लिबनेट के अंतर्गत इंडकैट एक ऐसा डाटाबेस है, जिससे पूरे भारत के 675 विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकों की सूचना मिल जाएगी। इसकी अन्य सेवाओं में वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन अंतर्गत विश्वविद्यालय को 13,000 ई–जर्नल उपलब्ध होंगे। शोधशुद्धि साफ्टवेयर के जरिए प्लैगरिज्म जांचने में मदद मिलेगी और निशुल्क होगा। 'शेरनी' प्लेटफार्म महिला शिक्षकों के शोध और उनके कार्यों को दर्शाएगा।

आइआरआइएनएस विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के सभी शिक्षकों के योगदान का डाटाबेस सुरक्षित करते हुए उनकी रैंकिंग भी करेगा।

प्रो. सिद्दीकी बने मेरठ सिटी एम्बेस्डर : सीसीएसयू कैंपस में लाइब्रेरियन प्रो. जमाल अहमद सिद्दीकी को ग्लोबल लीडर्स फाउंडेशन दिल्ली ने मेरठ सिटी एम्बेसडर बनाया है। आठ नवंबर 2025 को प्रो. सिद्दीकी दिल्ली में प्रस्तावित विकसित भारत–2047 कांफ्रेंस में मेरठ का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सीसीएसयू का 60वां स्थापना दिवस मना

- कुलपति ने गौरवशाली इतिहास याद किया
- कहा– विवि ने देश को दीं महान हस्तियां

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यलाय ने मंगलवार 1 जुलाई को अपना 60वां स्थापना दिवस समारोह मनाया। इस दौरान पहले कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला और विश्वविद्यालय के अधिकारीगण व शिक्षकों ने महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया। उसके बाद हवन–पूजन किया गया। विश्वविद्यालय के गौरवशाली इतिहास को याद करने के साथ ही इसकी गरिमा को और बढ़ाने का संकल्प लिया गया। समारोह में कुलपति ने कहा कि सीसीएसयू ने पीएम–सीएम समेत कई महान हस्तियां देश को दी हैं।

प्रोफेसर संगीता शुक्ला ने विश्वविद्यालय के गौरवशाली इतिहास को साझा किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की स्थापना 1 जुलाई 1965 को मेरठ विश्वविद्यालय के नाम से हुई थी। बाद में इसे महान किसान नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के सम्मान में वर्तमान नाम प्रदान किया गया।

उन्होंने कहा कि यह संस्थान उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षा व्यवस्था में एक स्तंभ के रूप में स्थापित है। इसने देश को प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, न्यायाधीश, खिलाड़ी, मंत्री और कई अन्य विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किए हैं।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय में अत्याधुनिक पुस्तकालय, प्रयोगशाला, शोध केंद्र और खेल सुविधा विद्यार्थियों और शिक्षकों को शिक्षा और अनुसंधान के लिए प्रेरित करती हैं। योग विज्ञान विभाग की ओर से निःशुल्क स्वास्थ्य प्रयोगशाला का संचालन भी किया जा रहा है। इससे न केवल विश्वविद्यालय परिवार बल्कि नागरिक भी लाभान्वित हो रहे हैं। यह संस्थान राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन एवं शोध पत्र प्रकाशन के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा विभिन्न प्रतिष्ठित जर्नल्स में किए गए प्रकाशनों ने इसकी शैक्षिक प्रतिष्ठा को वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान की है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के साथ शैक्षणिक सहयोग किया है। इससे विद्यार्थियों और फैकल्टी को वैश्विक स्तर पर शोध एवं शिक्षा के नए अवसर प्राप्त हुए हैं। कुलपति ने कहा कि संस्थान गुणवत्ता आधारित उच्च शिक्षा, नवाचार और अनुसंधान की नई ऊंचियां छूने के लिए संकल्पित है।

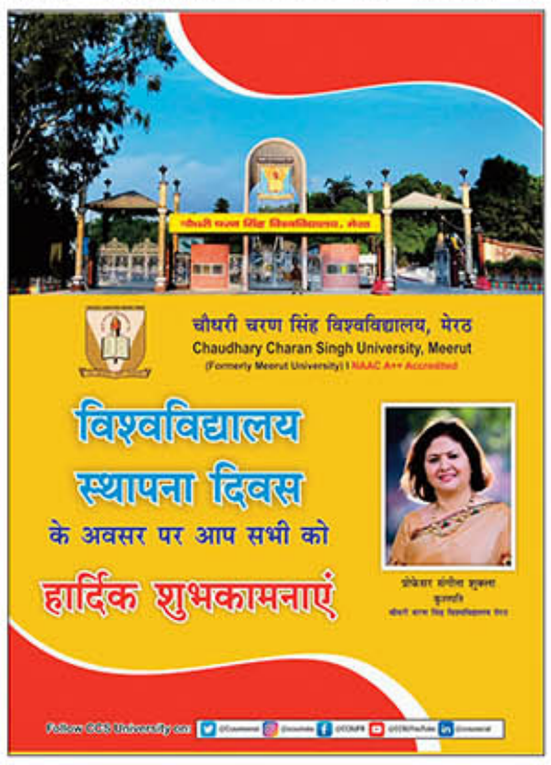

समारोह में प्रति कुलपति प्रोफेसर मृदुल कुमार गुप्ता, कुलसचिव डॉ. अनिल कुमार यादव, वितत् अधिकारी रमेश चंद्र, परीक्षा नियंत्रक वीरेंद्र कुमार मौर्य, प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता, प्रो, केके शर्मा, प्रो. वीरपाल सिंह, प्रो. भूपेंद्र सिंह, प्रो. नवीन चंद्र लोहनी, प्रो. अतवीर सिंह आदि मौजूद रहे।

पौधा लगाएं और पेड़ बनने तक जिम्मेदारी भी लें : कुलपति

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में वृहद पौधा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने स्वयं पौधा लगाकर कार्यक्रम की शुरुआत की।

कुलपति प्रो. शुक्ला ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम जैसे भावनात्मक और प्रेरक अभियान हमें प्रकृति के साथ जुड़ने का अवसर देते हैं। यदि हर व्यक्ति साल में एक पौधा लगाए और उसकी जिम्मेदारी उठाए, तो न केवल हरियाली बढ़ेगी, बल्कि हमारा पर्यावरण भी शुद्ध और संतुलित रहेगा।

प्रति कुलपति प्रो. मृदुल कुमार गुप्ता, कुलसचिव डा. अनिल कुमार यादव, चीफ प्राक्टर. प्रो. वीरपाल सिंह, प्रो. जितेंद्र ढाका, प्रो. नीलू जैन गुप्ता, प्रो. प्रशांत कुमार मौजूद रहे।

तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के सामने पौधारोपण करतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला।

फिल्म 'वनवास' की स्क्रीनिंग के बाद समीक्षा

परिसर संवाददाता

मेरठ। मेरठ चलचित्र सोसायटी एवं चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल के तत्वावधान में प्रख्यात फिल्म निर्देशक अनिल शर्मा द्वारा निर्देशित फिल्म 'वनवास' की स्क्रीनिंग की गई।

फिल्म देखने के बाद तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार के निदेशक प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने कहा कि यह फिल्म समाज के वर्तमान परिदृश्य को प्रदर्शित कर रही है। आज वृद्धाश्रमों की संख्या में जो बढोतरी हो रही है उससे कहीं न कहीं परिवार में संस्कार का अवमूल्यन एक महत्वपूर्ण कारण है। फिल्म की पटकथा एवं डायलॉग प्रभावशाली हैं।

मेरठ चलचित्र सोसायटी के महासचिव अंबरीश पाठक ने फिल्म की समीक्षा करते हुए कहा कि फिल्म तो समाज का आइना है। यह फिल्म बहुत हद तक अपने सरोकार को पूरा कर रही है।

कार्यक्रम में डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, डॉ. दिशा दिनेश, वंशीधर चतुर्वेदी, लव कुमार सिंह, ज्योति राठौर आदि ने फिल्म के विभिन्न आयामों पर अपने विचार रखे।

फिल्म वनवास के एक दृश्य में नाना पाटेकर, सहयोगी कलाकार के साथ।

औघड़नाथ मंदिर : आस्था और इतिहास का संगम

फीचर

अवनी मिश्रा
बीएजेएमसी
द्वितीय वर्ष

मेरठ शहर में स्थित औघड़नाथ मंदिर एक ऐसा धार्मिक स्थान है जो न केवल भगवान शिव का पवित्र धाम है बल्कि भारत की आजादी के पहले स्वतंत्रता संग्राम का गवाह भी है। यह मंदिर मेरठ के लोगों की आस्था, संस्कृति और इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है।

इतिहास से जुड़ाव

औघड़नाथ मंदिर का संबंध 1857 की क्रांति से है, जब भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ पहला विद्रोह किया। उस समय यह मंदिर क्रांतिकारियों की गुप्त बैठक का केंद्र बना। इसे "काली पलटन मंदिर" भी कहा जाता है क्योंकि

यहां पास ही ब्रिटिश सेना की काली पलटन यानी भारतीय सिपाही रहते थे।

धार्मिक महत्व

यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। भक्त यहां रोज जलाभिषेक और आरती करने आते हैं। सोमवार, महाशिवरात्रि और सावन के महीने में यहां लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। मंदिर में शिवलिंग के अलावा हनुमान जी, गायत्री माता और अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां भी हैं।

मंदिर परिसर की खासियत

मंदिर का परिसर शांत, स्वच्छ और आध्यात्मिक वातावरण से भरा हुआ है। यहां एक पवित्र कुंड भी है, जिसमें लोग पहले आस्था से स्नान करते थे। हालांकि अब यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। मंदिर में श्रद्धालुओं के लिए बैठने, प्रसाद वितरण और धार्मिक आयोजन की अच्छी व्यवस्था है।

आज औघड़नाथ मंदिर न केवल पूजा, बल्कि देश की आजादी की भावना, संस्कृति और धर्म का प्रतीक बन चुका है। यहां आकर लोग शांति, सकारात्मक ऊर्जा और भक्ति का अनुभव करते हैं।

औघड़नाथ मंदिर मेरठ का गौरव है। यह मंदिर धार्मिक आस्था के साथ–साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को भी जीवंत बनाए हुए हैं। अगर आप मेरठ आएं तो इस मंदिर में दर्शन जरूर करें।

संरक्षक : प्रोफेसर संगीता शुक्ला (कुलपति), **मुख्य संपादक** : प्रोफेसर प्रशांत कुमार, **संपादकीय सलाहकार** : डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. बीनम यादव, **संपादक** : लव कुमार सिंह, **संपादकीय टीम** : बीएजेएमसी और एमएजेएमसी के छात्र–छात्राएं।

नवसत्र पर हवन : रानी लक्ष्मीबाई छात्रावास में नवसत्र 2025–26 के शुभारंभ पर सकारात्मक ऊर्जा के संचार और अच्छे शैक्षणिक वातावरण के लिए हवन किया गया। इसके बाद छात्रावास में तीज उत्सव का आयोजन भी हुआ।

नई पीढ़ी को फैशन उत्पादों से आकर्षित करेगा हथकरघा

सीसीएसयू ने बुनकर सेवा केंद्र से किया एमओयू, बनाए जाएंगे जूट के जींस–टीशर्ट, स्कर्ट और लहंगा चोली

परिसर संवाददाता

मेरठ। भारत सरकार के 'स्वदेशी अपनाओ' मुहिम से युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिए अब हैंडलूम यानी हथकरघा ने विशेष पहल की है। युवाओं के फैशन ट्रेंड को समझते हुए अब जूट के जींस–टीशर्ट, स्कर्ट, लहंगा चोली जैसे उत्पाद बनाए जाएंगे। युवाओं को हथकरघा उत्पादों की ओर आकर्षित करने के साथ इस क्षेत्र में व्याप्त व्यापक रोजगार की संभावनाओं से भी जोड़ा जाएगा। इस बाबत चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत संचालित बुनकर सेवा केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है।

सीसीएसयू में प्रेसवार्ता के दौरान बुनकर सेवा केंद्र के डिप्टी डायरेक्टर तपन शर्मा ने बताया कि हथकरघा उत्पादों को फैशन से जोड़ने के लिए नवाचार किए जा रहे हैं।

सीसीएसयू के साथ कुछ कालेजों और शहर के केएल इंटरनेशनल स्कूल व सेंट फ्रांसिस वर्ल्ड स्कूल में हथकरघा में रोजगार संभावनाओं से युवा पीढ़ी को अवगत करते हुए उन्हें हैंडलूम के उत्पाद बनाना सिखाया जा रहा है। कृषि के बाद हथकरघा ही ऐसा क्षेत्र है, जिसमें सबसे अधिक उत्पादन और रोजगार सृजन होता है।

सीसीएसयू के ललित कला विभाग में 15 जुलाई से 100 युवाओं को हथकरघा उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समन्वयक प्रोफेसर अलका तिवारी ने बताया कि हथकरघा दिवस पर विश्वविद्यालय के अटल सभागार में विशेष कार्यक्रम होगा। सात से 15 अगस्त तक हथकरघा उत्पादों की प्रदर्शनी लगेगी।

सेंट फ्रांसिस स्कूल की प्रिंसिपल मनीषा जैन ने कहा कि भारतीय परंपरा से युवा पीढ़ी को जोड़ने की मुहिम में वह भी योगदान दे रही हैं।

कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला, प्रति कुलपति मृदुल गुप्ता आदि ने हथकरघा दिवस कार्यक्रम का पोस्टर जारी किया।

हथकरघा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में चरखा चलातीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला (ऊपर), सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों के साथ कुलपति और अतिथिगण (बाएं) और हथकरघा से बने वस्त्रों का प्रदर्शन करतीं मॉडल (दाएं)।

हथकरघा हमारी शान, बुनकरों का सम्मान : वीसी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में गुरुवार 7 अगस्त को 11वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान विवि कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने प्रेरक संदेश में सभी हथकरघा बुनकरों को दिन विशेष की शुभकामना देते हुए हथकरघा उद्योग को देश की शान और सम्मान का प्रतीक बताया।

भारत सरकार वस्त्र मंत्रालय द्वारा निर्देशित बुनकर सेवा केंद्र मेरठ और सीसीएस यूनिवर्सिटी के संयुक्त तत्वावधान में समारोह का उद्घाटन प्रो. संगीता शुक्ला, प्रति कुलपति प्रो. मृदुल गुप्ता, कुलसचिव अनिल यादव और डॉ. प्रो. वीरपाल सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

इस दौरान हथकरघा प्रदर्शनी में विभिन्न स्थानों से आए बुनकरों द्वारा हथकरघा के विभिन्न उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। पावर लूम व चरखा भी चलाया गया। इस प्रदर्शनी में केले, गन्ने आदि वनस्पतियों के रेशे प्रदर्शित किए गए, जो कपड़ा बनाने के काम में आते हैं।

समारोह के द्वितीय चरण में अटल सभागार में विभिन्न महाविद्यालय तथा स्कूलों के बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। इस दौरान तपन शर्मा उपनिदेशक बुनकर सेवा केंद्र ने कहा कि भारत कई पारंपरिक उत्पादों का उत्पादन करता है, जैसे साड़ी, कुर्ते, शॉल, घाघरा चोली, लुंगी, फैशन के सामान, बेडस्प्रेड आदि। समकालीन उत्पाद श्रेणी में, देश फैशन फैब्रिक, पश्चिमी पोशाक, बिस्तर की चादरें, पर्दे, रसोई की चादरें, सजावटी सामान, गलीचे की दरी आदि का उत्पादन हो रहा है।

एंटीबायोटिक का बनेगा यूरिया, पर्यावरण रहेगा सुरक्षित

सीसीएसयू ने विकसित की एंटीबायोटिक को तोड़कर डायोक्साइड व नाइट्रोजन में बदलने की तकनीक

परिसर संवाददाता

मेरठ। फार्मा कंपनियों से वेस्ट के तौर पर निकलने वाले एंटीबायोटिक्स के असर से पर्यावरण को बचाने की दिशा में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने बड़ी राह दिखाई है। शोध टीम ने एंटीबायोटिक्स को तोड़कर कार्बन डाईआक्साइड और नाइट्रोजन में बदलने की तकनीक विकसित कर ली है। इसके अंतर्गत कार्बन डाईआक्साइड अमोनिया के संपर्क में आने पर यूरिया और नाइट्रोजन में तब्दील हो जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया के शोध में विश्वविद्यालय को तीन पेटेंट मिले हैं।

सीसीएसयू के भौतिक विज्ञान विभाग के शोधार्थियों ने टाइटेनियम डाइ. आक्साइड को सिल्वर नैनोग्रेन से मिलाकर एक नया फोटो कैटलिटिक पदार्थ विकसित किया है जो व्यापक रूप से प्रयुक्त एंटीबायोटिक सिप्रोफ्लाक्सासिन को विघटित करता है। सूर्य के प्रकाश में महज दो घंटे में ही 99.25 प्रतिशत तक सिप्रोफ्लाक्सा. सिन को विघटित करने में सफलता मिली। पानी को शुद्ध करने की दिशा में यह सौर आधारित तकनीक इंडस्ट्री के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगी।

सीसीएसयू के भौतिक विज्ञान विभाग के प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने बताया कि इस शोध से जुड़े दो और शोध कार्य आगे बढ़ाए गए जो कार्बन मोनो आक्साइड और कार्बन डाइ. आक्साइड की पहचान, नियंत्रण और रूपांतरण पर केंद्रित हैं। इन शोधों में उत्पन्न नैनो सामग्रियों और फ्रेमवर्क का उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण व हरित ऊर्जा उत्पादन के लिए नए रास्ते खोले जा सकते हैं।

ऐसे काम करेंगे नैनोग्रेन

फार्मा कंपनियों के वेस्ट निकलने वाले स्थान पर जाली लगाकर उस पर नैनोग्रेन की कोटिंग होगी। उससे निकलने वाला प्रदूषित जल धूप में पहुंचते ही नैनोग्रेन अपना काम शुरू कर देंगे।

इसी तरह औद्योगिक इकाईयों व अन्य स्थानों से कोयला, डीजल, प्राकृतिक गैस जैसी अधजली ईंधनों के कारण उत्पन्न होने वाली घातक कार्बन मोनो आक्साइड की पहचान और नियंत्रण में यह नैनो सामग्री सहायक होगी।

यह गैस को अलग करने के साथ ही उपयोगी पदार्थों में परिवर्तित करेगी। वहीं नैनो कार्बन डेकोरेटेड मेटल आक्साइड और मेटल आर्गेनिक फ्रेमवर्क्स कम लागत वाली पर्यावरण अनुकूल तकनीकें हैं जो कार्बन डाइ. आक्साइड की पहचान और उसे रासायनिक उत्पादों या ईंधन में बदलने में सक्षम हैं।

इन तीनों शोध के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय को तीन पेटेंट मिल चुके हैं और तीन आर्टिकल सेरामिक्स इंटरनेशनल और मैटेरियल टुडे सस्टेनेबिलिटी में प्रकाशित हुए हैं।

इन शोध कार्यों में प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में अंशिका गुप्ता, दीपक कुमार और कीर्ति भारद्वाज ने मेरठ के साथ ही दक्षिण कोरिया में महीनों तक शोध कार्य किया है।

सीसीएसयू का 37वां दीक्षांत समारोह 18 सितंबर को

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय का 37वां दीक्षांत समारोह 18 सितंबर को आयोजित किया जाएगा। कैंपस, कॉलेजों में 50 से अधिक कोर्स में मेधावियों की अनंतिम सूची जारी हो गई है। अगस्त के तीसरे हफ्ते तक सीसीएसयू अधिकांश कोर्स में मेधावियों की सूची जारी कर देगा। 150 से अधिक मेडल मेधावियों को दिए जाएंगे।

विश्वविद्यालय ने प्रैक्टिकल, वायवा के चलते लंबित रिजल्ट जारी करने को संबंधित कॉलेजों को अंक भेजने के निर्देश दिए हैं। दीक्षांत समारोह की तैयारियां तेजी से की जा रही हैं।

उत्साह और जोश : काकोरी ट्रेन एक्शन डे की सौवीं वर्षगांठ पर विश्वविद्यालय में निकली तिरंगा यात्रा के दौरान शिक्षकों और छात्र–छात्राओं में काफी जोश दिखाई दिया।

तिरंगा यात्रा के जरिये दिया राष्ट्र प्रेम का संदेश

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में शुक्रवार 8 अगस्त को काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ के समापन अवसर पर प्रभात फेरी और तिरंगा यात्रा निकाली गई। शुरुआत कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने मुख्य द्वार से हरी झंडी दिखाकर की।

यात्रा परिसर के विभिन्न हिस्सों से गुजरते हुए कुलपति कार्यालय पर समाप्त हुई। तिरंगा यात्रा में विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी तथा छात्र–छात्राएं हाथों में राष्ट्रीय ध्वज थामे उत्साहपूर्वक सहभागी बने। भारत माता की जय और वंदे मातरम जैसे ओजस्वी नारों से सम्पूर्ण परिसर राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग गया।

कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने कहा कि तिरंगा केवल एक ध्वज नहीं, प्रत्येक भारतीय के स्वाभिमान, एकता और अखंडता का प्रतीक है। यह यात्रा राष्ट्रवाद के प्रति समर्पण और जनचेतना के माध्यम से एक श्रेष्ठ राष्ट्र निर्माण की दिशा में हमारे संकल्प को पुष्ट करती है। राष्ट्रवाद की भावना केवल भावनात्मक नहीं, अपितु यह लोकतंत्र को सशक्त बनाने का सशक्त औजार भी है।

इतिहास विभाग में लगी तिरंगा प्रदर्शनी

मेरठ। सीसीएसयू कैंपस के इतिहास विभाग में तिरंगा प्रदर्शनी लगी। स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय एवं विथिका का केएल इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने शैक्षिक भ्रमण किया। विभागाध्यक्ष प्रो. केके शर्मा, डॉ. कुलदीप त्यागी, डॉ. योगेश कुमार, डॉ. मनीषा त्यागी, डॉ. शालिनी प्रज्ञा, लोकेश शर्मा, हिमांशु, कालूराम, विकास आदि मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय में निकली तिरंगा यात्रा के दौरान राष्ट्रीय ध्वज लेकर चलतीं कुलपति प्रोफेसर संगीता शुक्ला (ऊपर) और विश्वविद्यालय के अधिकारी और शिक्षक। इतिहास विभाग में तिरंगा प्रदर्शनी के दौरान छात्रों को जानकारी देते विभागाध्यक्ष प्रोफेसर केके शर्मा (बाएं)। उत्तर पुस्तिका भवन के सामने ललित कला विभाग ने (दाएं) तिरंगा रंगोली से सैनिकों को नमन किया।

स्व. कैलाश प्रकाश का 116वां जयंती समारोह मनाया

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद और राजनेता स्व. कैलाश प्रकाश का 116वां जयंती समारोह मनाया गया। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर केके शर्मा ने कैलाश प्रकाश के सादा जीवन उच्च विचार वाले सिद्धांत को अपने जीवन में चरितार्थ करने का आह्वान किया। कहा कि एक स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद, राजनेता के रूप में उनको देखना, समझना और उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। उनसे हमें राष्ट्र व जनहित को सर्वोपरि रखते हुए आगे बढ़ते रहने की सीख उनके जीवन से मिलती है।

उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देशहित के लिए समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने आजाद हिंद फौज में रहे कर्नल शाहनवाज को मेरठ लोकसभा चुनाव में पराजित कर दिया था। यह उनकी जनता में लोकप्रियता का स्पष्ट प्रमाण था।

मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित डा. दीपक ने कहा कि अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया उनका संघर्ष और स्वतंत्रता के बाद उत्तर प्रदेश के वित्त एवं शिक्षा मंत्री के रूप में मेरठ को दी गई उनकी धरोहर अविस्मरणीय है। मेरठ मेडिकल कालेज व अस्पताल, मेरठ विश्वविद्यालय (वर्तमान में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय) और स्पोर्ट्स स्टेडियम उनकी ही देन है। कहा कि बाबू कैलाश प्रकाश का जन्म मेरठ के परीक्षितगढ़ के सामान्य कृषक परिवार में हुआ। उनके सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक समरसता के विचारों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। पूर्व पत्रकार पुष्पेंद्र शर्मा ने कहा कि यह दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि कैलाश प्रकाश ने शैक्षिक जगत में मेरठ को विश्वविद्यालय की अनुपम भेंट दी है। प्रोफेसर कृष्णकांत शर्मा ने कहा कि उनके विचारों को आगे ले जाने के लिए इतिहास विभाग स्थित म्यूजियम का विस्तारीकरण चल रहा है। संचालन डा. कुलदीप कुमार त्यागी ने किया।

सैनिकों को किया नमन

मेरठ। सीसीएसयू कैंपस में उत्तर पुस्तिका भवन के सामने ललित कला विभाग ने तिरंगा रंगोली बनाते हुए सैनिकों को नमन किया। विद्यार्थियों ने तिरंगे पर केंद्रित आकृतियां सजाकर रंगोली बनाई। छात्रों ने रंगोली से शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए सीमा पर डटे सैनिकों को नमन किया। प्रो. नीलू जैन एवं प्रो. केके शर्मा ने शुभारंभ किया। प्रो. अलका तिवारी ने कहा कि यह रंगोली लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत करते हुए राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान बढ़ाएगी।

रंगोली में पूजा रानी, आंचल उज्जवल, सार्थक, सोनिया, सार्थक कुमार, मनीष कुमार, निशु, मेघा मंडल और दीपांजलि को विशिष्ट योग्यता प्रमाण पत्र दिया गया। डॉ. रीता सिंह, डॉ. शालिनी धामा, डॉ. पूर्णिमा वशिष्ठ, दीपांजलि, दीपक त्यागी, प्रवीण पंवार, मितेंद्र गुप्ता मौजूद रहे।